वट सावित्री कथा

https://mehndidesigns.fun/

बहुत समय पहले, मद्र देश में एक राजा अश्वपति राज्य करते थे। वे बहुत ही धर्मपरायण और प्रजा के प्रति दयालु थे, लेकिन उन्हें एक बड़ी चिंता थी कि उनके कोई संतान नहीं थी। राजा अश्वपति और रानी मालविका ने अपने जीवन का अधिकांश समय संतान प्राप्ति के लिए तपस्या और यज्ञ में बिताया। उनकी भक्ति और तपस्या से प्रभावित होकर देवी सावित्री ने उन्हें दर्शन दिए और उन्हें एक कन्या के जन्म का वरदान दिया।

राजा अश्वपति और रानी मालविका की बेटी का जन्म हुआ और उसका नाम सावित्री रखा गया। सावित्री बचपन से ही बहुत सुंदर, विदुषी और गुणी थी। जब सावित्री युवा हुई, तो उसने विवाह के योग्य वर की तलाश शुरू की। एक दिन, वह अपने पिताजी की अनुमति लेकर वन में तपस्वी का दर्शन करने गई। वहां उसने सत्यवान नामक एक तेजस्वी युवक को देखा। सत्यवान न केवल

दिखने में सुंदर था, बल्कि वह बहुत ही धर्मनिष्ठ और परोपकारी भी था।

सावित्री को सत्यवान से प्रथम दृष्टि में प्रेम हो गया। जब वह अपने पिता के पास वापस आई, तो उसने सत्यवान से विवाह करने की इच्छा व्यक्त की। राजा अश्वपति ने नारद मुनि से परामर्श किया। नारद मुनि ने बताया कि सत्यवान बहुत ही धर्मपरायण है, लेकिन उसके जीवन के केवल एक वर्ष शेष हैं। यह सुनकर राजा और रानी दुखी हो गए और सावित्री को सत्यवान से विवाह करने से मना किया। परंतु सावित्री अपने प्रेम और संकल्प में अडिग थी। उसने कहा, "मैंने एक बार मन से सत्यवान को अपना पति स्वीकार कर लिया है और अब किसी अन्य को नहीं अपना सकती।"

आखिरकार, राजा अश्वपति ने सावित्री की इच्छा के आगे झुककर सत्यवान के साथ उसका विवाह कर दिया। विवाह के बाद, सावित्री और सत्यवान वन में रहने लगे। सत्यवान अपने वृद्ध और नेत्रहीन पिता की सेवा करता और जंगल से लकड़ी काटकर लाता। सावित्री अपने पति और ससुराल की सेवा में दिन-रात लगी रहती।

एक वर्ष बीत गया और वह दिन आ गया जब सत्यवान के जीवन का अंत होना था। सावित्री ने इस दिन से तीन दिन पहले से उपवास करना शुरू कर दिया और भगवान से सत्यवान के जीवन की रक्षा की प्रार्थना की। उस दिन सत्यवान जंगल में लकड़ी काट रहा था और अचानक बेहोश होकर गिर पड़ा। सावित्री ने सत्यवान का सिर अपनी गोद में रखा और देखा कि यमराज उसके प्राण लेने आ गए हैं। सावित्री ने यमराज से सत्यवान के प्राण न लेने की विनती की, लेकिन यमराज ने उसे समझाया कि जीवन-मृत्यु का चक्र अटल है और वे इसे बदल नहीं सकते।

सावित्री ने यमराज का पीछा किया और अपनी भक्ति और वाकपटुता से उन्हें प्रभावित किया। सावित्री ने यमराज से कहा, "यदि धर्म, सत्य और भक्ति के कारण मुझे कोई वरदान मिल सकता है, तो कृपया मुझे यह वरदान दें कि मेरे पति सत्यवान का जीवन लौटा दें।" यमराज उसकी भक्ति से बहुत प्रभावित हुए और उसे सत्यवान के प्राण वापस लौटाने का वचन दिया। सत्यवान का जीवन वापस लौट आया और वह उठ खड़ा हुआ।

सावित्री और सत्यवान ने खुशी-खुशी घर लौटकर अपने वृद्ध माता-पिता को यह अद्भुत घटना सुनाई। सावित्री की भक्ति, प्रेम और संकल्प की शक्ति ने उसे अपने पति का जीवन वापस दिलाया। इस प्रकार, वट सावित्री व्रत का महत्व और मान्यता बढ़ी और यह व्रत हर साल ज्येष्ठ माह की अमावस्या को मनाया जाने लगा।

वट सावित्री व्रत का पालन करने वाली महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र और समृद्धि के लिए व्रत करती हैं और वट वृक्ष की पूजा करती हैं। यह कथा हर साल विवाहित महिलाओं को प्रेरित करती है और उन्हें अपने पति के प्रति अपने प्रेम और समर्पण को और मजबूत करने का संदेश देती है।